जनवरी - २०२५

(चतुर्थ अंक)

वर्धा डायरी

ई - पत्रिका (मासिक)

स्वामी विवेकानंद पर एकाग्र विशेषांक

प्रधान संपादक
विवेक रंजन सिंह

आवरण चित्र
अभय दुबे

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के छात्रों का उपक्रम

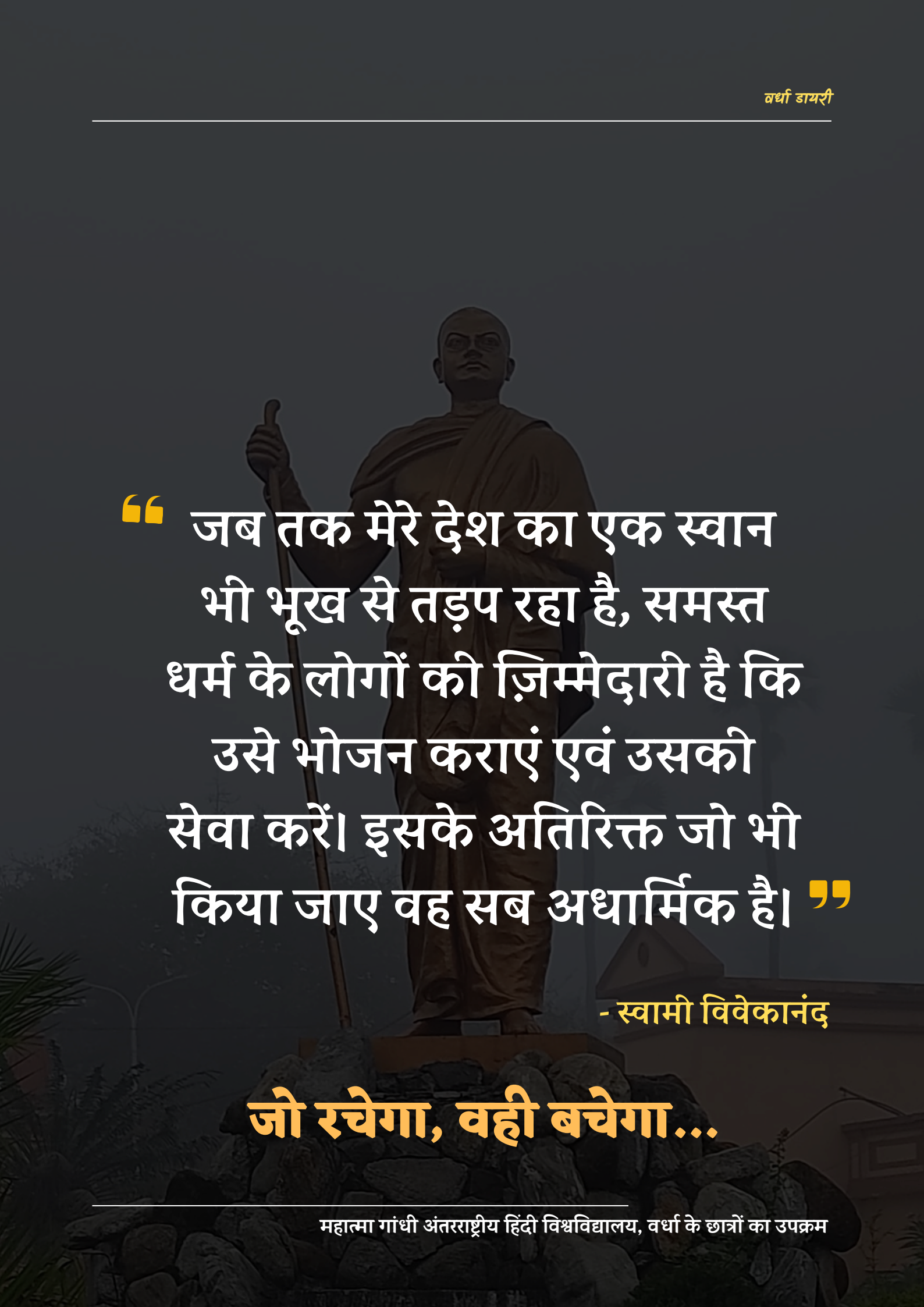

“ जब तक मेरे देश का एक स्वान भी भूख से तड़प रहा है, समस्त धर्म के लोगों की ज़िम्मेदारी है कि उसे भोजन कराएं एवं उसकी सेवा करें। इसके अतिरिक्त जो भी किया जाए वह सब अधार्मिक है। ”

- स्वामी विवेकानंद

जो रचेगा, वही बचेगा...

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय
हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(पूर्ण रूप से छात्रों द्वारा प्रकाशित की जा रही पत्रिका)

वर्धा डायरी

दो शब्द

'वर्धा डायरी' ई पत्रिका महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के छात्रों द्वारा प्रकाशित की जा रही है। यह पत्रिका पूर्ण रूप से एक खुला मंच है जहां आप अपने रचनात्मक विचारों को पाठकों के साथ साझा कर सकते हैं। इस पत्रिका को शुरू करने का उद्देश्य यही है कि हिंदी विश्वविद्यालय परिसर में अध्ययनरत छात्रों के भीतर छिपी रचनाधर्मिता को जागृत कर, उन्हें सबके सामने प्रस्तुत किया जाए। हिंदी विश्वविद्यालय अपने जिन उद्देश्यों को लेकर स्थापित किया गया था, उसको पूरा करने में हमारा एक छोटा सा योगदान है। हम चाहते हैं कि आप अपनी रचनाओं से एक सकारात्मक वातावरण स्थापित करने में हमारी मदद करें। हमारा आपसे आग्रह है कि आप अपनी जिन भी रचनाओं को भेजें वो आपकी मूल हों । इस पत्रिका को हम सिर्फ़ विश्वविद्यालय परिसर तक सीमित न करके, पूरे वर्धा शहर के लिए खोल रहे हैं। ऐसे में बापू और विनोबा की धरती वर्धा व उसकी विशेषताओं से भी अवगत कराना हमारा उद्देश्य है।

विवेक रंजन सिंह
(प्रधान संपादक)

अभय दुबे
(संपादक /
कला - संपादक)

संपादकीय संपर्क
संपादक - वर्धा डायरी
चंद्रशेखर आजाद छात्रावास, कक्ष संख्या - २३
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
पोस्ट - हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स,
वर्धा ४४२००१ (महाराष्ट्र)
ईमेल - wardhadiary@gmail.com

© प्रकाशकाधीन

• संपादन एवं प्रबंध पूर्णतया अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

प्रारंभ वर्ष - सितंबर , २०२४
मुद्रक - स्व - मुद्रित ई पत्रिका

(प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली सामग्री अथवा रचनाओं के प्रकाशन हेतु संपादक का निर्णय ही मान्य होगा। प्रकाशित रचनाओं की रीति - नीति या विचारों से संपादकों की सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में प्रकाशक की पूर्ण जिम्मेदारी होगी।)

संपादक मंडल

गोविंद राय
संपादक

खुशाल सिंह
अतिथि संपादक

राखी
तकनीकी मार्गदर्शक

प्रबंध संपादक

हर्ष आनंद

प्रियांशु कुमार

शिया गोस्वामी

रागिनी

(इस पत्रिका का संपादन मंडल अस्थाई है। हर अंक में संपादन मंडल का विस्तार व बदलाव किया जाता रहेगा।)

(पत्रिका पूर्ण रूप से अभी ई पत्रिका है और इसके प्रिंट करने या उसके वितरण की इजाज़त अभी नहीं है। किसी विशेष स्थिति में प्रकाशक के अनुमति से ही इसके प्रिंट निकलवाए जा सकते हैं। यदि बिना प्रकाशक की अनुमति से कोई इसके प्रिंट को निकलवाता है और उसका वितरण करता है तो कानूनी कार्यवाई हेतु वह स्वयं ज़िम्मेदार होगा। प्रेस व रजिस्ट्रेशन अधिनियम के अनुसार जब इसका आईएसएसएन अंक प्राप्त हो जायेगा, तभी इसे प्रिंट माध्यम में वितरण किया जा सकता है।
किसी भी आपत्ति या विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र वर्धा (महाराष्ट्र) होगा।

इस अंक में...

अपनी बात

~ प्रधान संपादक की कलम से (०७)

संपादकीय ~ अभय दुबे (०८)

वर्धा डायरी ~ विवेक रंजन सिंह (१०)

कविता
अभिजीत मिश्रा
(३८)

रचनाएं

भारतीय साहित्य का अर्थ ~ यशवर्धन (११)
ख्याल, ढेर सारे ख्याल ~ गुलाब चारण (१२)
देश के भीतर देश - विश्वास सिंह। (१३)

विशेष

सन्यासी का आह्वान, हम सबके नाम - खुशाल सिंह (१६)

स्वामी विवेकानंद : युगपुरुष और दीदी के प्रेरणाश्रोत - अंकिता पटेल (३३)

अनमोल वचन

स्वामी जी के विचार ~ आदित्य तेवारी (३९)

शुभ - संदेश

महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय हिंदी समाज की रचनात्मकता का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। यहाँ के छात्र भाषा और साहित्य दोनों के क्षेत्र मे सक्रिय रहे हैँ यह खुशी की बात है कि विश्वविद्यालय परिसर से एक ई पत्रिका (वर्धा डायरी)की शुरुआत होने जा रही है। पत्रिका से जुड़े छात्रों को इसके लिये बधाई और मेरी शुभकामनायें।

श्री विभूति नारायण राय (पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)

प्रकाश और अंधकार का युग्म एक सतत और अनिवार्य संघर्ष की याद दिलाता है । भाषा प्रकाश का ही एक रूप है जिससे दुनिया अर्थवान हो उठती है और उसे भी अंधकार का प्रतिरोध करना पड़ता है । पर भाषा की शक्ति प्रकाश से थोड़ा आगे बढ़ती है क्योंकि वह वर्तमान से आगे बढ़ कर भविष्य रचती रचाती चलती है । भाषा के गर्भ में पलती रचनाशीलता युग का निर्माण करती है । हमारी शुभकामना है कि " वर्धा डायरी " काल की संवेदना को थामे भाषा के सामर्थ्य की वाहिका बने । लोक तंत्र की प्राण नाड़ी है अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और डायरी उसे जीवित करने का उद्यम कर रही है । स्वराज की भूमि वर्धा से आरंभ हो रही विचारों के स्वराज की यह यात्रा मंगलमय हो ।

श्री गिरीश्वर मिश्र (पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय् वर्धा के छात्रों द्वारा द्वारा शीघ्र प्रकाशित की जा रही ई पत्रिका वर्धा डायरी के लिए मेरी ओर से अनंत शुभकामनाएं। मैं उम्मीद करता हूं कि इस डायरी के प्रकाशन से छात्रों के बीच साहित्यिक रचनाओं और अध्ययन पठन-पाठन के प्रति जागरूकता बढ़ेगी और इन्हीं के बीच से भविष्य के लेखक उभरकर सामने आएंगे। रचनात्मकता का एक पहलू यह भी है कि यह छात्रों को एक श्रेष्ठ और मानवीय संवेदना से युक्त विवेकशील नागरिक बनाएगी।मेरी ओर से समस्त संपादक मंडल को अनंत शुभकामनाएं।

श्री अशोक मिश्र कहानीकार व पूर्व संपादक बहुवचन पत्रिका (महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा)